OM 22 MAHARASHTRA final_Page 1 and 2 18/02/2015 17:49 Page 6

हिंगोली-महा.। विधायक थाहणाजी मुताकुले को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. अरुणा।

केशोद-गुज.। 'यात्रा खुशनुमा जीवन की ओर' कार्यक्रम के उद्घाटन अवसर पर मंच पर उपस्थित हैं डॉ. प्रो. गजेरा जी, जादुगर चिराग भाई हकुभा, योगाचार्य दुष्यंत मोदी, ब्र.कु. डॉ. सविता, ब्र.कु. रूपा तथा अन्य।

इन्दौर-महेश्वर। 'ईश्वरीय निमंत्रण' कार्यक्रम का दीप प्रज्वलन कर उद्घाटन करते हुए नगराध्यक्ष दामोदर दास महाजन, ब्र.कु. सूर्य, ब्र.कु. अनीता, ब्र.कु. सारिका, ब्र.कु. नारायण तथा अन्य।

पंढ़रपुर-महा.। विश्वशान्ति गुरूकुल के सालगिरह पर आयोजित कार्यक्रम के दौरान प्रार्थना करते हुए प्रिन्सीपल सुनीता जी, प्रोजेक्ट डायरेक्टर प्रसाद जी, संगीतकार आम्माजी, संस्थापक कराड जी, ब्र.कु. सोमप्रभा, ब्र.कु. संगीता, ब्र.कु. उज्जवला तथा अन्य।

भोपाल-सारनी। नवनिर्मित सेवाकेन्द्र 'प्रभु उपवन' के उद्घाटन अवसर पर आयोजित 'परमात्म शक्ति द्वारा महपरिवर्तन का समय' कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए ब्र.कु. अवधेश, ब्र.कु. रेखा, ब्र.कु. नीता, ब्र.कु. शैला, ब्र.कु. पंचशिला, ब्र.कु. निर्मला तथा ब्र.कु. प्रतिभा।

बैंगलोर-कुमारा पार्क। 'परमात्म शक्ति द्वारा महापरिवर्तन का समय' कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए केम्पन्न जी,समाजसेवी, ब्र.कु. विजयलक्ष्मी, ब्र.कु. तुलसी तथा अन्य।

रशिया -सेंट पिटर्सबर्ग। '7 बिलियन एक्ट्स ऑफ गुडनेस' की लॉन्चिंग कार्यक्रम में कैंडल लाइटिंग के पश्चात् उपस्थित हैं पेवेल सोल्टन,डिप्युटी चेयरमैन,सेंट पिटर्सबर्ग पार्लियामेंट, एलेना बेरेज़नाया,साल्ट लेक सिटी ओलम्पिक चैम्पियन,फिगर स्केटिंग, ईवन क्रास्को,थियेटर व फिल्म कलाकार, फादर रोमन, ब्र.कु. संतोष, ब्र.कु. सुधा तथा अन्य।

दिल रूपी दीद से दीदार करो

सामान्यत: मनुष्य मन व बुद्धि में जीता है। मन में जीना तनाव को जन्म देना है और बुद्धि में जीना पांडित्य में वृद्धि करना है, पुस्तकीय ज्ञान की अभिवृद्धि करना है। जीवन का आनंद और उत्सव न तो मन में है और न बुद्धि में है। हमने बड़े-बड़े बुद्धिमानों को बुद्धू बनते देखा है और बुद्धू-से दिखाई देने वाले कभी-कभी अति बुद्धिमानी की बात कर जाते हैं। आपको आनंद और उत्सव का आस्वादन करना है, तो मैं आपके भीतर के अज्ञात सागर की ओर आमंत्रण देता हूँ।

वह अज्ञात सागर मनुष्य के ठीक मध्य बिंदु में है। मन और बुद्धि तो परिधि पर है, नाभि भी परिधि पर है। सागर का केन्द्र है मनुष्य का हृदय। हृदय जब नीचे की ओर बहता है, तो वह विकार का रूप ले लेता है। यह एक परिधि हुई। हृदय जब ऊपर बढ़ता है, तो बुद्धिमय होता है, यह है दूसरी परिधि। मनुष्य के लिए प्रज्ञा परिधि और हृदय मूल केन्द्र है। जब व्यक्ति हृदय से जीता है तो महसूस होता है कि उसके सिर तो है ही नहीं। मैं यही चाहता हूँ कि व्यक्ति सिर-विहीन होकर हार्दिक हो जाए, बुद्धि से तुम दूसरों के प्रश्नों का समाधान कर सकते हो, लेकिन हृदयवान होने पर सारे सवाल ही तिरोहित हो जाएंगे। तुम्हारे पास प्रश्न ही नहीं होंगे, बल्कि तुम स्वयं ही एक समाधान हो जाओगे, उत्तरों के उत्तर, जवाबों के जवाब। प्रज्ञा के द्वारा मन को जीतेंगे, प्रज्ञा से प्रश्नों के उत्तर देंगे और तर्कों को काटेंगे, पर हृदय से अन्यों को और करीब लाएंगे। हृदय से एक सेतु बनाएंगे। हम हृदय में उस संवेदनशीलता का निर्माण करेंगे, जिसकी आज के ज़माने में मृत्यु हो चुकी है।

अगर हृदय के द्वार नहीं खुलेंगे, तो जीवन अंधकारमय है। फिर चाहे मन कितना ही मौन क्यों न हो या बुद्धि अपनी पूरी गहराई पर हो। हृदय में उतरे बिना जीवन में सरसता नहीं आएगी। मन और बुद्धि में जीने वाले के लिए हृदय विभाव-दशा है और मेरे लिए स्वभाव-दशा। हार्दिक व्यक्ति अपनी ओर से हर समय, हर क्षण प्रेम बरसाता है, जबकि प्रज्ञा-मनीषियों की दृष्टि में यह प्रेम राग है, विभाव-दशा है। तुम्हारे जीवन में सरसता होनी ही चाहिए। जब तुम नितांत एकांत के क्षणों में हो और हृदय में स्नेह की रसधार न हो, तो जीवन की सार्थकता क्या? जीवन में रस न हो, प्रेम का झरना न हो, हृदय का उत्सव न हो, आनंद का उत्सव न हो, तो जीवन में क्या पाया?

हृदय के पास अपनी आँख है। ऐसी आंख जो सारे संसार को देख सके। संसार से टूट तो सभी सकते हैं, पर जुड़ हर कोई नहीं सकता। तुम एक संकुचित दायरे से तो स्वयं को जोड़ सकते हो, लेकिन कहा जाए कि सम्पूर्ण अस्तित्व को अपने में समाविष्ट कर लो तो यह कठिन कार्य होगा। प्रार्थनाएं ज़रूर

विश्व-कल्याण की कर लेते हो, पर कल्याण न तो कोई करता है, न चाहता है। अपने बेटे को जिस समय हम सौ रुपये दे रहे हैं, उसी क्षण कोई ज़रूरतमंद सहयोग के लिए पहुंच जाए तो हम उसकी उपेक्षा कर बैठेंगे, उसे लौटा देंगे। हमारे हृदय में सभी के लिए प्रेम नहीं है। एक सीमा तक ही प्रेम विस्तीर्ण होता है। हमारा प्रेम बहुत ही छोटा है, वह भी मानसिक या शारीरिक है। आपका प्रेम हृदय से उत्पन्न नहीं हुआ है, आपका प्रेम योग से निष्पन्न नहीं हुआ है। जब प्रेम हृदय और योग से आएगा, वह कुछ पाना नहीं चाहेगा, सदा देने को तत्पर होगा। जिस क्षण प्रेम लुटाया जाता है, एक नए धर्म का उद्भव होता है जिसे हम करुणा कहते हैं। जब तक लुटने का भाव न आए, लुट जाने की आकांक्षा न हो, तब तक करुणा, प्रेम रहता है। यही प्रेम जब पाने की इच्छा करने लगता है, तो मन का विकार हो जाता है।

मन को साधने की बात नहीं करुंगा। मन को तो विसर्जित करना है। हमें हृदय से जीना है। हृदय से जीकर ही जीवन का आनंद लिया जा सकता है। हृदय ही आनंद का द्वार है। हृदय में एकाग्र होते ही आनंद का विस्फोट होता है। हृदय में रहकर हर क्षण आनंद में रह सकते हो। हृदय से हम हर पल, हर क्षण और कहीं भी उसका अनुभव कर सकते हैं, यहां तक कि प्रकृति के हर तत्व में भी उसका वरदान नज़र आएगा, हर ओर उसके प्रेम में डूबे हुए संगीत के स्वर ही सुनाई देंगे। संसार से प्रेम करके देखो, तब यह प्रश्न ही न उठेगा कि परमात्मा है या नहीं, क्योंकि उसी की सुंदर रचना ही सब ओर है। कभी यह तर्क नहीं जगेगा कि आने वाले कल में क्या होगा, क्योंकि वह सब व्यवस्था कर रहा है। हृदयवान होकर ही कुछ कर सकते हो। प्रेम और करुणा को जी सकते हो। हृदय ही प्रेम और करुणा का सागर है। हृदय ही प्रेम और करुणा का आधार है। हृदय के होने पर ही प्रेम, करुणा और शांति है। बाहर की आँखें कुछ भी देखती रहें, पर हृदय की आँख ही आँख है। महावीर ने संदेश दिया था कि सम्यक दर्शन, सम्यक ज्ञान और सम्यक चरित्र ही मोक्ष-मार्ग है। सम्यक दर्शन का अर्थ है हृदय की आँखों से देखना। हृदय की आँख के बिना पूरा-पूरा और सही नहीं देख पाओगे। अगर मुझे हृदय की आँख से देखोगे तो ही जान पाओगे कि मैं क्या हूँ। अगर बुद्धि और तर्क की आँखों से मुझे देखोगे तो मेरे प्रति स्वयं तुम्हारे सौ संदेह खड़े हो जाएंगे। प्रभु करे, आप हर ओर से करुणा के फूल बांटें। प्रभु करे, आप अपना प्रेम एक-दूसरे को प्रदान करें। जब भी विपरीत वातावरण बने, अपने हृदय में चले जाओ। कुछ देर वहीं रुके रहो, ताकि वह विपरीत वातावरण तुम्हारे हृदय में असर न करे। वह मन और बुद्धि के दरवाज़े तक पहुंचे और वहीं से वापस लौट जाए। हमें तो जीवन का आनंद चाहिए और वह आनंद हृदय में ही घटित होगा।